IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महात्मा गांधी के विचार–दर्शन

डॉ0 रंजीत कुमार दास
ग्रामः–तरबन्ना
पो0ः–पंचवीर
जिलाः–बेगूसराय, बिहार

वर्तमान समय में आधुनिकतावाद की लोकप्रियता बढ़ शैक्षिक विद्वानों के द्वारा इतिहास का अंत और विचारधारा की अंत की बात की जा रही है। वही गांधी विचार की ओर विश्व के विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों में आकर्षण निरंतर बढ़ता जा रहा है। देश ही नहीं विदेशो में गांधी जी के मूल्यों को अपनाने में स्वीकार कर रहें है। महात्मा गॉधी आधुनिक समाज–दर्शन के, एक ऐसे विशेषज्ञों माने जाते है? जिन्होंने अहिंसा, सत्य और नैतिकता पर आश्रित एक आदर्श समाज की रूपरेखा तैयार की। महात्मा गाँधी एक अवतारी पुरूष थे। उन्होने देवत्व को मनुष्यत्व मे मिलाने की कोशिश किये, इस महामानव का जीवनवृत वस्तुतः बहुत ही अद्‌भुत उदाहरण है। उनकी जिन चारित्रिक विशेषताओं, पर हम देखते है तो सब पूर्णतः समान लगते हैं इन्हीं कारणों से उन्हे बापू की संज्ञा मिली, महात्मा गाँधी सिर्फ भारत के, ही नहीं बल्कि विश्व के हर मानवीय चेतना का सही मानवतावाद के रूप में प्रतिनिधित्व करते थे। महात्मा गाँधी की जीवन–गाथा अपनी पवित्रता और व्यापकता से परिपूर्ण है। उनके जीवन के आदर्शो को हम पंच–अस्तेय, अछुतोद्धार, राम राज्य की स्थापना के स्वप्न आदि के माध्यम से व्यक्त कर सकते है।[1]

गाँधी जी के जीवन दर्शन पर उनके माता–पिता का धर्मिक प्रभाव भी उन्हे प्रेरणास्त्रोत साबित हुई। उनके माता जी के धैर्य और साहस से गाँधी जी बहुत ऊर्जान्वित हुए। विशेषकर गाँधी जी का व्यक्तित्व, उनके अपने माता–पिता के अनुकरण पर आधारित हैः उनके माता–पिता वैष्णव थे एवं उनके घर का माहौल धार्मिक था इसका प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव गाँधी जी पर पड़ा। उन्होने रामायण, महाभारत, भगवद् गीता आदि का गहन अध्ययन किया और अनेक महान व्यक्तियों तथा कुछ महान ग्रन्थों का, भी प्रभाव पड़ा। वे खासकर बौद्ध–धर्म, इस्लाम–धर्म, इसाई–धर्म, जैन–धर्म इत्यादि से भी प्रभावित हुए। उन पर महान दार्शनिक टॉल्सटाय, रस्किन, इत्यादि का भी प्रभाव पड़ा था।

महात्मा गाँधी पर गोता का प्रभावः

गाँधी जी ने अपनी आत्म–कथा में लिखा है कि,

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधो भिजायते।।
क्रोधाद् भवति सम्मोहः सम्मोहात्समृतिविभतमः।।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशप्तणश्यति।।

इन श्लोकों का प्रभाव गाँधी जी के मन पर बहुत असर किया। विलायत मे रहते हुए, जव थियोसोकिस्तो, से गाँधी जी की मुलाकात हुई तो उन्होने एडविन आर्नल्ड का गीता पढ़ने का प्रयास किया। इस प्रकार वे दूसरे अध्याय के अंतिम श्लोको उनकी कानों में गूँजती रही। यह मान्यता धीरे–धीरे बढ़ती गयी, तत्पश्चात् सर्वोत्तम ग्रन्थ के रूप मे भगवद्गीता को अमूल्य ग्रंथ मानने लगे। इसी द्रव्यमान उन्होने आर्नल्ड का 'बुद्ध–चरित' का अध्ययन भगवद्गीता से भी अधिक रस–पूर्वक पढ़ा एवं उससे प्रभावित हुए। इस तरह से गाँधी जी विलायत मे रहते हुए मैडम ब्लैवटस्की और एनी बेसेंट से भी मुलाकात किये। थियोसोफिकल सोसायटी के सम्बन्ध मे जो भी समाचारपत्रों मे चर्चा चलती थी, उसे गाँधी जी दिलचस्पी के साथ पढ़ा करता था धीरे–धीरे ब्लैवटस्की की पुस्तक 'की टु थियोसोफी (थियोसोफी की कुंजी) का भी अध्ययन किये। उससे गाँधी जी के मन मे अपने हिन्दु धर्म की पुस्तकें पढ़ने की प्रबल इच्छा पैदा हुई।[2]

महात्मा गाँधी को सबसे ज्यादा शांति और सान्त्वना श्री मद्भागवत गीता से प्रात्त हुई। एवं कर्मयोगी की शिक्षा भी उन्हे गीता धर्मग्रन्थ से मिली, वे अपनी समस्याओं का निराकरण गीता मे खाजते थे, गीता की महता को स्वीकार करते हुए गाँधी जी दर्शाते है कि ''मैं यह स्वीकार करता हूँ कि जब मुझे शंका होने लगती है, निराशा घेर लेती है और आशा की कोई किरण नही दिखाई देती है, तो मैं भगवद् गीता उलटता हूँ और उसमें कोई ऐसा श्लोक मिल जाता है, किन्तु यदि उन घटनाआं का मुझ पर कोई दृष्टिगत प्रभाव या चिन्ह नहीं है तो यह भगवद् गीता के उपदेश का फल है।''[3]

गीता का अल्पज्ञान, रखने वाले व्यक्तियों का कथन है कि, गीता समाज की बुराइयो को हटाने के लिए हिंसा और युद्ध का पाठ सिखाता है। लेकिन यह गलत है। हकिकत यह है कि गीता निष्काम होकर, निस्वार्थ भाव से काम करने की शिक्षा देती है। गाँधी जी ने अपना दर्शन गीता से ग्रहण किया है।[4] इस प्रकार गीता हमें कर्मयोग का व्यावहारिक पाठ सिखाती है। सभी कर्मो के प्रति सादगी, और समाज की बुराईयों के प्रति अनवरत युद्ध, गीताग्रंथ की पहचान है। गाँधी जी ने गीता को एक रूपक के रूप मे ग्रहण किया है जिसमें मनुष्य के मस्तिष्क का अंतर्द्वन्द प्रतिफलित हुआ है। गाँधी जी के लिए गीता एक आध्यात्मिक संदर्भ है। अच्छे कर्म और अहिंसा के द्वारा ही आत्म–अनुभूति संभव है।[5]

इस प्रकार हम कह सकते है कि गाँधी जी की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, भौतिक और व्यावहारिक धारणाओ के निर्माता मे गीता की प्रेरणा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। एवं गाँधी जी की आत्मा के कण–कण में अनुप्रेरित और प्रभावित किया। परिणामस्वरूप उनके व्यक्तिगत तथा सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक व्यक्तित्व मे हर पल गीता की छाप पड़ी है। महात्मा गाँधी और इस्लाम, ''गाँधी जी की दृष्टि में इस्लाम शांति का धर्म है। सभी धर्म और माक्ष को पाने की कोशिश करते हैः हालांकि, मुसलमान तलवार का बहुत प्रयोग करते है, परन्तु कुरान हिंसा का प्रचार नही करता, दुर्भाग्यवश लोग सोचते है कि हिंसा ही इस्लाम–धर्म का पथ है, लेकिन उसके पवित्र ग्रंथ कुरान से हमे यह संदेश नही मिलाता। शायद इस्लाम का अर्थ है एक प्रकार का आत्म–त्याग या अपने स्वार्थ को मिटा देनाः इस पृथ्वी को यह सबसे बड़ा ज्ञान मिला है।''[6]

महात्मा गाँधी जी को धर्म के संस्कार घर की दीवारा में मिले वे सनातनी पर गर्वानुभूति करते थे। किन्तु उन्होने इस्लाम धर्म के गुणों की कभी रिस्कृत नही किये। बल्कि उनके धर्म ने गाँधी जी को सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के विचारो का पाठ सिखाया।[7] गाँधी जी के लिए धर्म का मूल–मंत्र सदाचार था एवम वे सदाचारहीन मनुष्य को धार्मिक मानने के लिए कभी तैयार नही हुए गाँधी जी की धारणा है, कि ''सब धर्म एक ही स्थान पर पहुँच जाते हैं तो अलग–अलग रास्ते अपनाने मे क्या हर्ज है।'' गाँधी जी का धर्म ऐसी मान्यताओ का आगार है, जिसमे सम्पूर्ण तत्व सत्य का प्रतीक हो।

गीता और कुरान दानों में ईश्वर के प्रति अहंकार, समर्पण और आत्म–त्याग के संबंध मे सिखाया गया है। एवं दोनों ग्रन्थां मं एक ही तरह के बहुत से अवतरणा को उद्धत करते है। कुरान के अनुसार, ''जो कोई भी लक्ष्य सिद्धि को अल्लाह के प्रति समर्पित कर देता है, उसने एक बहुत दृढ़ हाथ का सहारा ग्रहण कर लिया है।[8]

गाँधी जी का धर्म, इसलिए स्वधर्म, की प्रेरणा देता है। क्योंकि ''गाँधी जी के लिए धर्म के वास्तविक दृष्टिकोण का अर्थ है साहस एवं स्वेच्छापूर्वक उन कर्त्तव्यो को सम्पन्न करना जो स्वाभाविक रूप से मनुष्य के मार्ग मे आएँ'' ऐसी सात्विक विचारों को प्राप्त करने के पश्चात ही मनुष्य बुराईयों के चपेट से बच सकता है। इस मनोवृत्ति से हम किसी के दास नही बल्कि, वास्तविक आनन्द का मार्ग ला सकते है।[9]

महात्मा गाँधी और टॉल्सटायः

टॉल्सटाय एक रूसी लेखक थे– जिनका प्रभाव भी गाँधी जी पर पड़ा है। गाँधी जी के वे प्रथम शिक्षक और पथ–प्रदर्शक माने जाते है; यह दोनों की अवधारणा थी, कि दुनियॉ के हर, बुराईयों और कष्टों पर विजय पाने के लिए प्रेम ही हैं। और दोनों इस पथ पर डटे रहे। जिस तरह से गाँधी जी पर अपने घरेलु धार्मिक वातावरण का प्रभाव था ठीक उसी तरह टॉलस्टाय पर भी हमारे देश के उपनिषदों का काफी प्रभाव था। एवं दोनो ने वर्तमानकालीन औद्योगिक सभ्यता की कड़ी आलोचना की है। युद्धो के लिए हिंसात्मक साधनो का विरोध किया। वे मानव को समृधि के लिए जो उपयुक्त साधन है। वह है साधना की पवित्रता, श्रम की रोटी और ब्रह्मचर्य पर ही प्रश्नचिन्ह लगाये है। वे कहते है हम सभी ईश्वर के पुत्र है, हमारे परमपिता ईश्वर ही हैं ईश्वर एक समिष्टि है और हम उनकी आत्मा के एक कण हैं ईश्वरीय अस्तित्व ही यथार्थ है और हम एक कण की भांति सीमित है।[10]

गाँधी जी के ''सत्य'' शब्द का, उदय ''सत'' शब्द से हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है किसी वस्तु का अस्तित्व मे होना, वे कहते है ''सत्य ही ईश्वर है'' ईश्वर के बिना जगत संभव नहीं हो सकता जब जगत के लिए अस्तित्व अनिवार्य है तो सत्य के लिए अस्तित्व भी होनी चाहिए ऐसी व्यक्तित्व के पीछे, यही कारण मौजूद था। जिसकी सत्ता होती है। ईश्वर की सत्ता तो तीनो का में व्याप्त है, अर्थात वह सत्य है। गाँधी जी कार्यकाल सत्यनिष्ठा का जीता–जागता उदाहरण है। इसिलिए उन्होंने अपनी आत्मकथा का संज्ञा भी ''स्यात'' रखा यानि सत्य के प्रति मेरा एक अनुभव है।[11] ''डल मगचमतपउमदजे पूजी ज्तनजी'' उन्होंने सत्य के परिभाषा की तुलना सत्यम शिवम् और सुन्दरम् से की है। जिस तरह उसमें कोई भेद नही है। उसी तरह इसका अनुपालन हर क्षेत्र में हो, चाहे धर्म, राजनीतिक, अर्थनीति, समाजनीति, समाजनीति, दैनिक जीवन हो, चाहे धर्म राजनीतिक, अर्थनीति, समाजनीति, दैनिक जीवन हो या सामाजिक–वातावरण हो, हर क्षेत्र मे सामान्य रूप से पालन होना चाहिए। सत्य का संबंध सिर्फ वाणी में नहीं इनकी प्रयोग विचार और आचरण में होना अति आवश्यक है उसके बाद ही नैतिकता मे विकास होगी। तत्पश्चात ही वह सत्य को जान पायेंगे। गाँधी जी सत्य को याद दिलाते हुए कहे थे, कि सत्य एक ऐसी पुंजी है। जिसके माध्यम से हम ईश्वर को प्राप्त कर सकते है, सत्य की स्तम्भ को बरकरार रखने के लिए गाँधी जी को तनिक भी हिंसा का एहसास होते ही, वह कांति को स्थगित कर देते थे।[12]

टॉलस्टाय कहते है कि, आदमी को जीविका के लिए शारीरिक परिश्रम आवश्य करना चाहिए; टॉलस्टाय के द्वारा लिए गये निबंध ''श्रम की रोटी'' को गाँधी जी ध्यानपूर्वक अध्ययन किए तत्पश्चात् गाँधी जी ''ब्रेड लेबर'' की तुलना यज्ञ से किए। वे कहते ह मनुष्य का कर्म ही धर्म है, मनुष्य अपने कार्य से पुरूषार्थ की उपाधी पा सकते है।[13] इस संबंध में टॉलस्टाय के जीवन तरफ

इंगित करूंगा कि कैसे उन्होंने अपने देश में एक 'रसियन कृषक बोर्ड ऑफ द रेफ' के द्वारा प्रतिपादित ''श्रम रोटी'' सिद्धांत को ख्याति दिलाई है।[14] टॉल्सटाय के सिद्धांतो को गाँधी जी अपने जीवन और भविष्य के सभी कार्यो का आदर्श बनाया।[15]

जैन मत और गाँधी जी :

जैन धर्म के नीतिशास्त्र विशेषकर ''पंचमहाव्रत'' 1. अहिंसा (हिंसा न करना) 2. सत्य 3. अस्तेय (चोरी ना करना) 4. ब्रह्मचर्य 5. अपरिग्रह (धन का संग्रह न करना) से विशेष रूप से गाँधी जी प्रभावित हुए है जैनियों के अनुसार, परमात्मा सृष्टिकर्ता नही हैं उसकी कृपा से किसी को भी मुक्ति नहीं मिलती; जैन धर्म के उत्तराध्ययन सूत्र कहते है कि मनुष्य स्वयं अपने आनंद के स्वामी हैं। अपने कष्ट को नष्ट भी स्वयं कर सकता है और मनुष्य के अन्दर जो शक्तियाँ ईश्वर ने निहित की है। उन शक्तियों का पूर्ण विकास कर ले तो वह 'परमात्मा' हो सकता है : गांधी जी जैन धर्म के आचारांग सूत्र से भी बहुत प्रभावित थे।[16]

निष्कर्षतः इस प्रकार गाँधी जी विचार–दर्शन के स्त्रोत में कई महान धर्मो, ग्रंथों एवं व्यक्तियों का योगदान रहा है। हम इन स्त्रोतो की सहायता से उनके विचारों को अलग–अलग सिद्धांतो को और अधिक रूप से पहचान पाते है। गाँधी जी जिस सिद्धांतो को ग्रहण किये; उसमें उनके व्यक्तित्व की छाप पड़ी है। उन्होंने उन सिद्धांतो की विस्तार, अपने अनुसार से किए। गाँधी जी समयानुसार तथा आवश्यकतानुसार अपने सिद्धांतो में निरंतर संशोधन करते रहे हैं। वे दर्शन और धर्म के जनक न होते हुए भी उन्हें देश का धार्मिक नेता तथा दार्शनिक समझा जाता है, क्योकि इन्होंने अपने जीवन–यापन में दर्शन और धर्म को चरितार्थ किये है। इस तरह से गाँधी जी पर अपने माता–पिता का स्थाई प्रभाव होते हुए। भारतीय परम्परा, व्यक्तिगत अनुभव और विश्व परम्परा का प्रभाव देखा जा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. प्यारेलाल, महात्मा गाँधी द लास्ट पेज, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद, 1958 पेज 0777
2. महात्मा गाँधी, सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1957, पृ0–64–65
3. जे0 पी0 कृपलानी, गाँधी दिज लाइफ एण्ड थाउट, पृ0–301–02
4. मोहन दास करमचंद गाँधी, किश्चियन मिशन्स, नव–जीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, द्वितीय संस्करण, 1960 पृ–30
5. रंगनाथ प्रसाद, गाँधी दर्शन– विश्वशान्ति की ओर, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, प्रेमचंद मार्ग, राजेन्द्रनगर, पटना, 5 नवम्बर, 2011 पृ–9–10
6. कुरान, 16.3
7. वीरेन्द्र शर्मा, गाँधी विचार दर्शन, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, 4637/20, अँसाडी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 2008 पृ0–125–26
कुरान, 16.3
वी0 पी0 वर्मा, दि पोलिटिकल फिलॉस्वाफी ऑफ महात्मा गाँधी एण्ड सर्वोदय, पृ0–66
कालिदास नाग, टॉल्सटाय और गाँधी, पुस्तक भंडार पटना, 1940, पृ0–12
रंगनाथ प्रसाद, गाँधी दर्शन– विश्वशान्ति की ओर, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, प्रेमचंद मार्ग, राजेन्द्र नगर, पटना–16, दिनांक 5.11.2011, पृ0–27–28
वीरेन्द्र शर्मा, गाँधी विचार दर्शन, प्रकाशन, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, 4637/20, अंसारी रोड, दरियागंज, 2008 पृ0–17
महादेव देसाई, गीता–महात्मा गांधी के अनुसार, पृ0–50
हिन्दी नव जीवन, (साप्ताहिक) अहमदाबाद, नव जीवन, यंग इंडिया के साथ ही निकला था, ताः 20.09.28
वही पृ0–284
ओम प्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, विश्व प्रकाशन, न्यू राज इण्टरनेशनल (प्रा.) लिमिटेड प्रयाग 4835/24 , अंसारी दरियागंज, नई दिल्ली, 2001 पृ0–23